रघुवीर सहाय

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» रघुवीर सहाय: परिचय और साहित्यिक पृष्ठभूमि

प्रश्न 1 (आसान). रघुवीर सहाय का जन्म किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – सन् 1929

प्रश्न 2 (आसान). उन्हें कौन सा प्रमुख सम्मान प्राप्त हुआ था?
उत्तर – साहित्य अकादेमी पुरस्कार

प्रश्न 3 (मध्यम). रघुवीर सहाय ने पत्रकारिता के क्षेत्र में किन संस्थानों से जुड़े थे?
उत्तर – ऑल इंडिया रेडियो के हिंदी समाचार विभाग, पत्रिका कल्पना, दैनिक नवभारत टाइम्स और दिनमान।

प्रश्न 4 (कठिन). उनकी कविताओं को समझने के लिए उनके जीवन परिचय को जानना क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – उनके जीवन अनुभव और पृष्ठभूमि को जानने से उनकी कविताओं के मूल भाव, विचारों और संदेशों को गहराई से समझने में मदद मिलती है, क्योंकि उनका साहित्य उनके अनुभवों का ही प्रतिबिंब होता है।

» रघुवीर सहाय की काव्य-शैली और विशेषताएं

प्रश्न 5 (आसान). रघुवीर सहाय की कविताओं में किस तरह की भाषा का प्रयोग होता था?
उत्तर – सहज और बातचीत की शैली वाली भाषा।

प्रश्न 6 (आसान). उनकी कविताओं में किस तरह के पात्र ज़्यादा मिलते हैं?
उत्तर – आम जन-जीवन से जुड़े, रोज़मर्रा के लोग।

प्रश्न 7 (मध्यम). रघुवीर सहाय की कविताओं में 'व्यंग्य' का क्या महत्व है?
उत्तर – व्यंग्य के माध्यम से वे सामाजिक बुराइयों पर गहरी चोट करते थे और पाठकों को सोचने पर मजबूर करते थे।

प्रश्न 8 (कठिन). आपकी नज़र में, रघुवीर सहाय की कविताओं को 'कहानीपन और नाटकीय वैभव' देने का क्या मतलब है?
उत्तर – इसका मतलब है कि उनकी कविताएँ सिर्फ़ सीधे-सीधे बात नहीं कहतीं, बल्कि एक कहानी की तरह आगे बढ़ती हैं जिसमें मोड़ और भावनाएँ होती हैं, और एक नाटक की तरह दृश्य और संवाद का आभास देती हैं, जिससे पाठक उसमें और गहराई से जुड़ पाता है।

» लघु की महत्ता का स्वीकार और सत्ता का विरोध

प्रश्न 9 (आसान). रघुवीर सहाय ने अपनी कविताओं में किन लोगों के अनुभवों को विषय बनाया?
उत्तर – उन्होंने समाज के हाशिए पर रखे गए, कमज़ोर और आम लोगों के अनुभवों को अपनी कविताओं का विषय बनाया।

प्रश्न 10 (आसान). 'लघु की महत्ता' का क्या अर्थ है?
उत्तर – 'लघु की महत्ता' का अर्थ है छोटी या सामान्य चीज़ों और व्यक्तियों के महत्व को स्वीकार करना।

प्रश्न 11 (मध्यम). रघुवीर सहाय किनके खिलाफ अपनी आवाज़ उठाते थे और क्यों?
उत्तर – रघुवीर सहाय समाज के ताकतवर लोगों और सत्ता के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाते थे, क्योंकि वे अक्सर कमज़ोरों का शोषण करते थे और अन्याय को बढ़ावा देते थे।

प्रश्न 12 (कठिन). 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता 'सत्ता के विरोध' का कैसा उदाहरण प्रस्तुत करती है?
उत्तर – यह कविता दिखाती है कि कैसे टीवी चैनल (जो सत्ता का एक रूप है) एक अपाहिज की पीड़ा का संवेदनहीनता से इस्तेमाल करता है, उसे रुलाने की कोशिश करता है ताकि उनका कार्यक्रम 'रोचक' बन सके। यह सत्ता के व्यावसायिक स्वार्थ और मानवीय करुणा के अभाव का विरोध करती है।

» 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता का परिचय

प्रश्न 13 (आसान). 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के कवि कौन हैं?
उत्तर – रघुवीर सहाय

प्रश्न 14 (आसान). यह कविता किस माध्यम की संवेदनहीनता को दर्शाती है?
उत्तर – दृश्य-संचार माध्यम (जैसे टेलीविज़न)

प्रश्न 15 (मध्यम). कवि ने 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता किस काव्य-संकलन से ली है?
उत्तर – 'जो लोग भूल गए हैं'

प्रश्न 16 (कठिन). 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – यह कविता दृश्य-संचार माध्यमों द्वारा पीड़ा के व्यवसायीकरण और उनकी संवेदनहीनता को उजागर करती है, और दर्शकों को ऐसी प्रस्तुतियों के प्रति संवेदनशील होने के लिए प्रेरित करती है।

» मीडिया की संवेदनहीनता और पीड़ा का व्यवसायीकरण

प्रश्न 17 (आसान). 'कारोबारी दबाव' का मीडिया पर क्या असर होता है?
उत्तर – कारोबारी दबाव के कारण मीडिया TRP या विज्ञापन के लिए खबरें दिखाती है, जिससे कई बार संवेदनहीनता आ जाती है।

प्रश्न 18 (आसान). अगर कोई चैनल एक गरीब बच्चे की दुख भरी कहानी सिर्फ़ रेटिंग के लिए दिखाए, तो यह क्या है?
उत्तर – यह पीड़ा का व्यवसायीकरण है।

प्रश्न 19 (मध्यम). 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के संदर्भ में, पत्रकार अपाहिज से 'क्या आप अपाहिज हैं?' जैसे सवाल क्यों पूछता है?
उत्तर – पत्रकार ऐसे सवाल अपाहिज की पीड़ा को दर्शकों के सामने उभारने के लिए पूछता है, ताकि कार्यक्रम अधिक 'भावनात्मक' और 'रोचक' लगे, जिससे चैनल की TRP बढ़े।

प्रश्न 20 (कठिन). मीडिया की संवेदनहीनता और पीड़ा के व्यवसायीकरण से सामाजिक मूल्यों पर क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ता है?
उत्तर – इससे समाज में करुणा और empathy (सहानुभूति) कम होती है, क्योंकि लोग दूसरों के दुख को सिर्फ 'मनोरंजन' के तौर पर देखने लगते हैं। मानवीय गरिमा का हनन होता है और लोग संवेदना खोकर केवल 'तमाशा' देखने के आदी हो जाते हैं।

» कविता का पाठ: 'कैमरे में बंद अपाहिज'

प्रश्न 21 (आसान). 'हम समर्थ शक्तिवान' – यहाँ 'हम' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है?
उत्तर – 'हम' शब्द दूरदर्शन के उन लोगों के लिए प्रयोग किया गया है जो खुद को ताकतवर मानते हैं।

प्रश्न 22 (आसान). कविता में 'एक बंद कमरे' का क्या महत्व है?
उत्तर – 'एक बंद कमरा' मीडिया के नियंत्रण को दर्शाता है, जहाँ अपाहिज व्यक्ति पर उनकी मर्जी चलती है और बाहर की दुनिया से वह कटा हुआ होता है।

प्रश्न 23 (मध्यम). कविता में अपाहिज व्यक्ति से पूछे गए सवालों में क्या संवेदनहीनता झलकती है? उदाहरण के साथ बताओ।

उत्तर – सवाल जैसे 'आप क्यों अपाहिज हैं?' या 'आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा?' संवेदनहीनता दर्शाते हैं। ये सवाल पीड़ित के दर्द को कुरेदते हैं, न कि उसका समाधान खोजने या सहानुभूति जताने के लिए होते हैं।

प्रश्न 24 (कठिन). कविता के अंत में 'परदे पर वक्त की कीमत है' का क्या अर्थ है और यह मीडिया के किस पहलू पर टिप्पणी करती है?

उत्तर – इसका अर्थ है कि टेलीविजन पर समय बहुत महंगा होता है और वे अपाहिज के दुख को दर्शकों के सामने बेचने के लिए एक निश्चित समय सीमा में चाहते हैं। यह मीडिया के व्यावसायिक और असंवेदनशील चेहरे को उजागर करता है, जहाँ भावनाएँ भी समय और पैसे के आगे गौण हो जाती हैं।

» कोष्ठकों का औचित्य और कविता का क्रूर यथार्थ

प्रश्न 25 (आसान). कविता में '(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़ा)' कोष्ठक से क्या पता चलता है?

उत्तर – यह प्रश्नकर्ता का व्यावसायिक इरादा दिखाता है कि वह अपाहिज की पीड़ा को दर्शकों के सामने बढ़ा-चढ़ा कर दिखाना चाहता है।

प्रश्न 26 (आसान). कोष्ठकों का उपयोग कविता को किस प्रकार गहरा बनाता है?

उत्तर – ये कविता में छिपी हुई क्रूर सच्चाई और किरदारों के आंतरिक भावों को उजागर करके उसे गहरा बनाते हैं।

प्रश्न 27 (मध्यम). कविता में आए कोष्ठक '(यह अवसर खो देंगे)' का क्या महत्व है? यह किसके 'अवसर खोने' की बात कर रहा है?

उत्तर – यह कोष्ठक प्रश्नकर्ता की व्यावसायिक मानसिकता को दर्शाता है। यह अपाहिज के लिए नहीं, बल्कि कार्यक्रम की सफलता के लिए 'अवसर खोने' की बात कर रहा है कि अगर अपाहिज नहीं रोया तो उनका शो सफल नहीं होगा।

प्रश्न 28 (कठिन). कविता में कोष्ठकों का उपयोग 'करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता' को कैसे उजागर करता है?

उत्तर – कोष्ठक वे बातें बताते हैं जो सीधे नहीं कही जातीं पर प्रश्नकर्ता के असली, क्रूर इरादों को दिखाती हैं। जैसे, बाहर से प्रश्न सहानुभूति जताता है, पर कोष्ठक के अंदर वह अपाहिज को रुलाने के लिए प्रेरित करता है, जिससे उसकी झूठी करुणा के पीछे छिपी क्रूरता सामने आती है।

» सामाजिक उद्देश्य और 'वक्त की कीमत'

प्रश्न 29 (आसान). कविता में 'सामाजिक उद्देश्य' कहने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर – कवि का आशय है कि यह टीवी कार्यक्रम शुरू करने का एक बहाना है, जो समाज सेवा का दावा करता है।

प्रश्न 30 (आसान). 'परदे पर वक्त की कीमत है' यह पंक्ति क्या बताती है?

उत्तर – यह पंक्ति बताती है कि टीवी चैनलों के लिए कार्यक्रम का हर सेकंड पैसे कमाने का ज़रिया है।

प्रश्न 31 (मध्यम). कवि मीडिया की किस मानसिकता पर व्यंग्य करते हैं जब वे 'सामाजिक उद्देश्य' और 'वक्त की कीमत' की बात करते हैं?

उत्तर – कवि मीडिया की उस मानसिकता पर व्यंग्य करते हैं जहाँ वे मानवीय पीड़ा और संवेदनशीलता को भी अपने व्यावसायिक लाभ (TRP, विज्ञापन) के लिए इस्तेमाल करते हैं, सामाजिक सरोकारों का सिर्फ दिखावा करते हैं।

प्रश्न 32 (कठिन). आज के दौर में मीडिया द्वारा प्रस्तुत 'सामाजिक उद्देश्य' वाले कार्यक्रमों में आप 'वक्त की कीमत' का दबाव कैसे देखते हैं? एक उदाहरण से स्पष्ट करें।

उत्तर – आज के कई रियलिटी शो या 'क्राइम अलर्ट' प्रोग्राम्स में 'सामाजिक संदेश' या 'जागरूकता' का दावा होता है, पर बीच-बीच में लंबे-लंबे, आकर्षक विज्ञापन आते रहते हैं। किसी गरीब या पीड़ित की कहानी को 'भावनात्मक' बनाने के लिए खींचते रहते हैं, ताकि दर्शक बने रहें और उन्हें विज्ञापन के लिए ज़्यादा पैसे मिलें। यह दिखाता है कि उनका 'सामाजिक उद्देश्य' गौण है और 'वक्त की कीमत' ही मुख्य है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. रघुवीर सहाय का जन्म और निधन कब व कहाँ हुआ था? उनकी दो प्रमुख रचनाओं के नाम बताइए।

› पहले हम उनके जन्म और निधन की जानकारी देखेंगे।

› जन्म: सन् 1929, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) में हुआ था।

› निधन: सन् 1990, दिल्ली में हुआ था।

› अब उनकी दो प्रमुख रचनाओं के नाम याद करेंगे।

› प्रमुख रचनाएँ: 'सीढ़ियों पर धूप में' और 'आत्महत्या के विरुद्ध' उनकी महत्वपूर्ण काव्य-संकलन हैं।

उत्तर – रघुवीर सहाय का जन्म सन् 1929 में लखनऊ (उत्तर प्रदेश) में हुआ था और निधन सन् 1990 में दिल्ली में। उनकी दो प्रमुख रचनाएँ हैं 'सीढ़ियों पर धूप में' और 'आत्महत्या के विरुद्ध'।

उदाहरण 2. रघुवीर सहाय की काव्य-शैली को ध्यान में रखते हुए, 'हत्या-लूटपाट और आगजनी, राजनैतिक भ्रष्टाचार और छल-छद्म इनकी कविता में उतरकर खोजी पत्रकारिता की सनसनीखेज रपटें नहीं रह जाते, आत्मान्वेषण का माध्यम बन जाते हैं' – इस पंक्ति का अर्थ समझाइए।

› पहले समझेंगे कि खोजी पत्रकारिता क्या करती है: वह घटनाओं को सिर्फ़ सनसनीखेज तरीके से बताती है, यानी खबर छापती है।

› फिर देखेंगे रघुवीर सहाय क्या करते हैं: वे उन घटनाओं को सिर्फ़ खबर की तरह नहीं लिखते।

› वे उन घटनाओं को 'आत्मान्वेषण का माध्यम' बनाते हैं। 'आत्मान्वेषण' मतलब खुद के अंदर झांकना, सोचना कि समाज में ऐसा क्यों हो रहा है, इसमें हमारी क्या भूमिका है।

› अतः, रघुवीर सहाय घटनाओं को सिर्फ़ 'क्या हुआ' की तरह नहीं दिखाते, बल्कि 'क्यों हुआ' और 'हमें इस पर क्या सोचना चाहिए' – इस गहराई तक ले जाते हैं। वे पाठक को सोचने पर मजबूर करते हैं।

उत्तर – इस पंक्ति का अर्थ यह है कि रघुवीर सहाय अपनी कविताओं में हत्या, लूटपाट, भ्रष्टाचार जैसी सामाजिक बुराइयों को सिर्फ़ एक खबर की तरह पेश नहीं करते। वे इन घटनाओं को इस तरह से प्रस्तुत करते हैं कि पाठक खुद से सवाल पूछे, समाज की गहराई में छिपी समस्याओं को समझे और आत्मचिंतन करे। वे सिर्फ जानकारी नहीं देते, बल्कि सोचने की दिशा देते हैं।

उदाहरण 3. रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' किस प्रकार लघु की महत्ता का स्वीकार और सत्ता के विरोध को दर्शाती है?

› पहला कदम: 'लघु' की महत्ता को पहचानना। कविता में 'अपाहिज' व्यक्ति 'लघु' का प्रतीक है, जिसे समाज में अक्सर कमज़ोर या अनदेखा किया जाता है। कवि इस अपाहिज के दुख को उजागर करके उसके अनुभव को महत्वपूर्ण मानता है।

› दूसरा कदम: 'सत्ता' के विरोध को समझना। यहाँ 'दूरदर्शन' या मीडिया की 'सत्ता' दिखाई गई है। वे खुद को 'समर्थ शक्तिवान' कहते हैं। ये लोग अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को अपने कार्यक्रम को 'रोचक' बनाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। वे उससे ऐसे सवाल पूछते हैं जो उसे और दुखी करते हैं, सिर्फ टीआरपी (TRP) बढ़ाने के लिए। यह 'सत्ता' का दुरुपयोग और संवेदनहीनता है।

› तीसरा कदम: कवि का दृष्टिकोण। कवि ने इस पूरी स्थिति का 'लगभग सपाट तरीके से बयान' किया है, लेकिन यह सपाटता ही उनकी व्यंग्य शैली है। वे यह दिखाकर विरोध करते हैं कि कैसे 'करुणा जगाने के मकसद से शुरू हुआ कार्यक्रम क्रूर बन जाता है' और कैसे पीड़ा को 'बेचा' जाता है।

› चौथा कदम: निष्कर्ष निकालना। इस प्रकार, कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' 'लघु' (अपाहिज व्यक्ति) के अनुभवों को महत्व देती है और 'सत्ता' (मीडिया) द्वारा उस पर किए गए अन्याय और संवेदनहीनता का ज़ोरदार विरोध करती है।

उत्तर – कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' एक अपाहिज व्यक्ति (लघु का प्रतीक) की पीड़ा को मानवीय गरिमा देते हुए दिखाती है कि कैसे 'दूरदर्शन' जैसे समर्थ माध्यम अपनी व्यावसायिक ज़रूरतों के लिए उसकी पीड़ा का शोषण करते हैं। इस तरह, कवि 'लघु' की मानवीय महत्ता स्थापित करता है और संवेदनहीन 'सत्ता' का विरोध करता है।

उदाहरण 4. रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' किस काव्य-संकलन से ली गई है और यह कविता मुख्य रूप से किस विषय पर आधारित है?

› पहला, हमें कविता का स्रोत याद करना है। 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता रघुवीर सहाय जी के काव्य-संकलन 'जो लोग भूल गए हैं' से ली गई है।

› दूसरा, हमें कविता का मुख्य विषय समझना है। यह कविता दृश्य-संचार माध्यमों (जैसे टेलीविज़न) और किसी व्यक्ति की पीड़ा के बीच के संबंध को दिखाती है।

› यह बताती है कि कैसे मीडिया अक्सर कारोबारी दबाव में आकर दूसरों के दुख को संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत करने की बजाय, उसे एक 'बिकाऊ' चीज़ बना देता है।

उत्तर – 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता रघुवीर सहाय के काव्य-संकलन 'जो लोग भूल गए हैं' से ली गई है। यह कविता मुख्य रूप से दृश्य-संचार माध्यमों द्वारा पीड़ा के व्यवसायीकरण और उनकी संवेदनहीनता पर केंद्रित है।

उदाहरण 5. एक टीवी रिपोर्टर एक प्राकृतिक आपदा में अपना सब कुछ खो चुके व्यक्ति से पूछता है, 'जब आपने अपना घर ढहते देखा तो आपको कैसा महसूस हुआ? क्या आप अपनी भावनाओं को शब्दों में बता सकते हैं?' इस सवाल में मीडिया की संवेदनहीनता और पीड़ा के व्यवसायीकरण का कौन सा पहलू झलकता है?

› पहचानें कि सवाल का लक्ष्य क्या है: रिपोर्टर व्यक्ति की सच्ची भावनाएँ जानना चाहता है, या उन्हें दर्शकों के सामने 'प्रदर्शित' करवाना चाहता है।

› देखें कि सवाल किस स्थिति में पूछा जा रहा है: व्यक्ति पहले से ही गहरे सदमे और दुख में है।

› सोचें कि ऐसे सवाल से पीड़ित को क्या फर्क पड़ेगा: ऐसे सवाल पूछने से व्यक्ति का दुख और बढ़ सकता है, वह असहज महसूस कर सकता है।

› विचार करें कि मीडिया का ulterior motive (अंदरूनी मकसद) क्या हो सकता है: यह सवाल कार्यक्रम को 'अधिक प्रभावी' या 'भावनात्मक' बनाने के लिए पूछा जा रहा है, ताकि दर्शक भावनात्मक रूप से जुड़ें और TRP बढ़े।

› निष्कर्ष निकालें: यह सवाल व्यक्ति की पीड़ा को एक 'तमाशा' बनाने की कोशिश है, न कि उसकी वास्तविक मदद करने की।

› समझें कि 'व्यवसायीकरण' कैसे हुआ: पीड़ित के दुख को 'प्रदर्शन' के लिए इस्तेमाल करके चैनल अपनी 'व्यावसायिक' सफलता (TRP, विज्ञापन) सुनिश्चित कर रहा है।

उत्तर – यह सवाल मीडिया की संवेदनहीनता को दर्शाता है क्योंकि यह पीड़ित के दर्द को दर्शकों के सामने 'प्रदर्शित' करके कार्यक्रम को 'रोचक' बनाने का प्रयास है। यह 'पीड़ा के व्यवसायीकरण' का उदाहरण है क्योंकि व्यक्ति के गहरे दुख को चैनल की TRP और व्यावसायिक लाभ के लिए एक 'उत्पाद' के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है।

उदाहरण 6. कविता की ये पंक्तियाँ पढ़िए और समझिए कि यहाँ मीडिया का कौन सा रवैया दिखाया गया है: 'हम समर्थ शक्तिवान, हम एक दुर्बल को लाएँगे, एक बंद कमरे में। उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं? तो आप क्यों अपाहिज हैं?'

› सबसे पहले, 'हम समर्थ शक्तिवान' पर ध्यान दो। यहाँ 'हम' कौन हैं? ये दूरदर्शन वाले लोग हैं जो खुद को बहुत ताकतवर समझते हैं।

› फिर, 'एक दुर्बल को लाएँगे, एक बंद कमरे में'। दुर्बल का मतलब कमज़ोर। वे एक अपाहिज व्यक्ति को अपनी मर्ज़ी से लाते हैं, उसे नियंत्रित करते हैं।

› अब सवाल देखो, 'तो आप क्या अपाहिज हैं? तो आप क्यों अपाहिज हैं?' ये सवाल उस व्यक्ति के दर्द को समझने के लिए नहीं, बल्कि उसे परिभाषित करने और उससे जवाब निकलवाने के लिए हैं, ताकि दर्शक देखें और भावुक हों।

› कुल मिलाकर, इन पंक्तियों में मीडिया का अहंकार, नियंत्रण की भावना और संवेदनहीनता साफ दिख रही है, जहाँ वे दूसरे की लाचारी का फायदा उठा रहे हैं।

उत्तर – इन पंक्तियों में दूरदर्शन की शक्ति, अपाहिज व्यक्ति पर उनका नियंत्रण और उसकी पीड़ा को सनसनीखेज तरीके से पेश करने की उनकी संवेदनहीन मानसिकता झलकती है। वे सिर्फ़ अपने कार्यक्रम को 'रोचक' बनाने के लिए ऐसे प्रश्न पूछते हैं।

उदाहरण 7. कविता में आए कोष्ठक '(हम खुद इशारे से बताएंगे कि क्या ऐसा?)' का औचित्य स्पष्ट कीजिए।

› पहला कदम: इस पंक्ति पर ध्यान दें और सोचें कि यह किसने कहा होगा और किस स्थिति में। यह पत्रकार द्वारा अपाहिज व्यक्ति को कहा गया है।

› दूसरा कदम: कोष्ठक के अंदर की बात का सीधा अर्थ समझें। इसका मतलब है कि पत्रकार खुद इशारे करके अपाहिज को रोने के लिए उकसा रहा है।

› तीसरा कदम: अब इसका औचित्य या महत्व बताएं। यह कोष्ठक प्रश्नकर्ता के क्रूर और असंवेदनशील इरादों को उजागर करता है। वह अपाहिज की भावनाओं की परवाह नहीं करता, बल्कि उसे एक 'प्रॉडक्ट' की तरह इस्तेमाल करके, रुलाकर अपने कार्यक्रम को सफल बनाना चाहता है। यह उसके व्यावसायिक उद्देश्य और संवेदनहीनता को दर्शाता है।

उत्तर – यह कोष्ठक प्रश्नकर्ता की असंवेदनशीलता, क्रूरता और अपाहिज की पीड़ा को व्यावसायिक लाभ के लिए इस्तेमाल करने की उसकी नीयत को स्पष्ट करता है।

उदाहरण 8. कवि 'सामाजिक उद्देश्य' के दावे और 'परदे पर वक्त की कीमत है' पंक्ति के माध्यम से मीडिया पर क्या व्यंग्य करते हैं?

› पहले समझो 'सामाजिक उद्देश्य' क्या है: कार्यक्रम की शुरुआत में यह दावा कि हम किसी अपाहिज व्यक्ति की मदद या समाज को जागरूक करने के लिए शो बना रहे हैं।

› फिर सोचो 'परदे पर वक्त की कीमत है' का क्या मतलब है: टीवी चैनलों के लिए हर सेकंड कीमती होता है, क्योंकि उसी समय में वे विज्ञापन दिखाते हैं और पैसा कमाते हैं।

› अब दोनों को जोड़ो: कवि कहते हैं कि 'सामाजिक उद्देश्य' का दावा सिर्फ एक मुखौटा है। असलियत में टीवी चैनल अपाहिज व्यक्ति की दुखभरी कहानी दिखाकर सिर्फ अपनी TRP बढ़ाना चाहते हैं, ताकि ज़्यादा विज्ञापन मिलें।

› निष्कर्ष: कवि मीडिया के व्यावसायिक दबावों पर व्यंग्य करते हैं, जो मानवीय पीड़ा को भी अपने मुनाफे के लिए इस्तेमाल करते हैं।

उत्तर – कवि 'सामाजिक उद्देश्य' के दावे को मीडिया का पाखंड बताते हैं और 'परदे पर वक्त की कीमत है' पंक्ति से यह स्पष्ट करते हैं कि मीडिया के लिए संवेदनशीलता से ज़्यादा मुनाफा कमाना महत्वपूर्ण है। वे मानवीय दुख का भी व्यवसायीकरण करते हैं।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• बोर्ड परीक्षा में रघुवीर सहाय के जीवन परिचय से संबंधित सीधे प्रश्न आ सकते हैं, जैसे जन्म स्थान, निधन वर्ष या उनकी प्रमुख रचनाओं के नाम। इन्हें ठीक से याद रखना।

• रघुवीर सहाय की काव्य-विशेषताओं पर प्रश्न अक्सर आते हैं। उनकी भाषा, व्यंग्यात्मक शैली और सामाजिक सरोकारों को उदाहरण सहित ज़रूर याद करना।

• यह अवधारणा 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के मूल भाव को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। बोर्ड परीक्षा में इस कविता से संबंधित प्रश्न अक्सर रघुवीर सहाय के 'सत्ता विरोधी' और 'मानवीय करुणा' के दृष्टिकोण पर आधारित होते हैं। इसे अच्छे से समझना।

• यह कविता बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इसके मुख्य विषय और कवि के संदेश पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं, खासकर मीडिया की संवेदनहीनता को स्पष्ट करने वाले।

• यह कविता बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के माध्यम से मीडिया की संवेदनहीनता और पीड़ा के व्यवसायीकरण पर प्रश्न अक्सर आते हैं। इस विषय पर अपने विचारों को स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने का अभ्यास करें।

• यह कविता बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें से मीडिया के व्यवहार, अपाहिज व्यक्ति की मानसिक स्थिति और कविवर रघुवीर सहाय के व्यंग्यपूर्ण कटाक्ष पर आधारित प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं। हर पंक्ति के पीछे छिपे भाव को समझना बहुत ज़रूरी है।

• बोर्ड परीक्षा में, इन कोष्ठकों पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं। हमेशा याद रखना कि इनके अंदर की बात सिर्फ 'एक्स्ट्रा' नहीं, बल्कि 'गहरी' और 'छिपी हुई' सच्चाई होती है।

• यह पंक्ति 'परदे पर वक्त की कीमत है' बहुत महत्वपूर्ण है। बोर्ड परीक्षा में इसके अर्थ और कवि के व्यंग्य पर सीधे प्रश्न आ सकते हैं। इसे अच्छे से समझ लेना, बच्चों!

एक नज़र में रिवीज़न

› रघुवीर सहाय: जन्म 1929 लखनऊ, निधन 1990 दिल्ली, साहित्य अकादेमी, पत्रकार-कवि।

› सहज भाषा, आम पात्र, सामाजिक व्यंग्य, कहानीपन, नाटकीयता।

› रघुवीर सहाय: लघु की महत्ता का स्वीकार, ताकतवरों और सत्ता का विरोध।

› रघुवीर सहाय की 'कैमरे में बंद अपाहिज', 'जो लोग भूल गए हैं' से, मीडिया की संवेदनहीनता पर।

› मीडिया का कारोबारी दबाव दुख को 'उत्पाद' बनाता है, संवेदनहीनता बढ़ाता है।

› मीडिया का संवेदनहीन चित्रण, पीड़ा का व्यवसायीकरण, मानवीय गरिमा का हनन।

› कोष्ठक प्रश्नकर्ता के इरादे, अपाहिज की मनःस्थिति, कार्यक्रम की क्रूर सच्चाई।

› कवि का व्यंग्य: 'सामाजिक उद्देश्य' बहाना, 'वक्त की कीमत' ही मीडिया का सच।